⌘ निर्भय योग ⌘

श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ योगीराज

संत श्री आशारामजी महाराज

" अपने निर्भय स्वरूप को जानो और
सब निर्बलताओं से मुक्त हो जाओ ! "

श्री योग वेदान्त सेवा समिति

संत श्री आशाराम आश्रम, अहमदाबाद–५

NIRBHAYA YOGA
By : Sant sri Asharamji Maharaj.

प्रथम आवृत्ति :
वसंत पञ्चमी
९-२-१९८१

मूल्य : ७५ पैसा

प्रकाशक :

श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आशाराम आश्रम
मोटेरा रोड़, साबरमती; अहमदाबाद-५

मुद्रक :

जयंतिलाल मणिलाल शाह
नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस,
घीकांटा रोड़, अहमदाबाद.

* अन्य प्रकाशन *

सहजवाणी (२-४-६)	हिन्दी	२-७०
दिव्य जीवन की ओर	,,	०-६०
सुख-दुःख से परे	,,	१-५०
परम सुख की ओर	,,	१-५०
जागो, अपने आप में	,,	१-२५
सत्संग कणिका	,,	०-४०
नारी धर्म	,,	०-५०
योग लीला	,,	६-५०
फकीरी मौत	,,	१-००
योग अमृत	,,	१-७०
नानक की झांकी	,,	२-००
निर्भय योग	,,	०-७५
वास्तविक जीवननो राह	गुजराती	१-५०
व्यवहारमां वेदान्त	,,	१-५०
जीवनना अजवाळां	,,	१-५०

आतम दीप जगावो	गुजराती	१–५०
अमी कटोरो	,,	१–५०
सत्संग सुवास	,,	१–५०
सत्संग सरिता	,,	०–५०
सत्संग निर्झर	,,	०–५०
अमृत निर्झर	,,	१–५०
नशाथी सावधान	,,	०–५०
राखडीनुं रहस्य	,,	१–२५
जीवननुं टॉनिक	,,	०–४०
संतवाणी	सिंधी	१–००
संत अंई सांईजा सबाझा	,,	१–००
सत्संग सरिता	,,	१–००
उंडा अंधारेथी	अन्य गुजराती	०–५०
ब्रह्मबावनी (पद्य) ,,	,,	१–००
संतवाणी ,, ,,	हिन्दी	१–२५
सुखमणी ,, ,,	सिंधी	४–००

मेरे अध्ययनकाल में काफी समय से मुझे मेरी साधना में योग्य मार्ग दर्शन देवे ऐसे महापुरुष की आवश्यकता मैं अनुभव कर रहा था । एक बार किसी के कहने से मैं आश्रम में स्वामीजी के दर्शन के लिये आया । स्वामीजी के दर्शन मात्र से मेरे हृदय के तार झंकृत हो उठे और मैंने उनके प्रति एक अलौकिक आकर्षण का अनुभव किया । कुछ ही समय बाद आश्रम में आयोजित ध्यानयोग शिविर में जब भाग लिया तो पूज्यश्री के सांनिध्य से हृदय की और ग्रंथिया खुली । एक बार आश्रम में घूमते हुए मन ही मन विचार कर रहा था कि मैं किस प्रकार अपने से सम्बंधित लोगों से हिसाब किताब पूरे करके आश्रम में ही आकर पूज्य श्री के सांनिध्य में रहते हुए जम कर साधना करूँ कि इतने में तो स्वामीजी ने कुटिया का दरवाजा खोला और मुझे बुलाकर मुस्कराते हुए पूछा—

"क्यों ! हिसाब किताब पूरे हुए कि नहीं ?"

सुनकर मैं तो चकित रह गया ! अन्दर ही प्रश्नों का समाधान भी मिल गया था । मैंने पूज्यश्री के चरणों में प्रणाम किया और तब से परम पूज्य संत श्री आशारामजी महाराज की दिव्य प्रेरणा से मेरे जीवन का पल पल पोषित हो रहा है ।

श्री करसनभाई पटेल, गुजरात युनिवर्सिटी
एम. ए. (तत्त्वज्ञान), रिसर्च स्टूडन्ट

आसन प्राणायाम आदि यौगिक क्रियाएं करने से शरीर की स्थूलता घटती है और मन शान्त होता है । परन्तु साधक योगमार्ग में ठीक से आगे तभी बढ सकता है जब उसे कोई पूर्ण योगी गुरु मिले । आप लोग बड़े भाग्यशाली हैं, क्योंकि आपको संत आशारामजी जैसे शक्तिपात करने में कुशल एवं समर्थ ब्रह्मनिष्ठ गुरू मिले हैं ।

पू. श्री बलरामदासजी महाराज
लोदरा (गुजरात)

सम्पादकीय

साबरमती सरिता के सुन्दर तीर पर प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त प्राचीन ऋषियों के पवित्र आश्रमों की याद दिलाता हुआ एक मनोरम आश्रम–उसमें अपने निजानन्द में रमते हुए एवं साधकों व भक्तों के बीच अपनी मधुर मुस्कान के साथ सत्संग सुधा की वृष्टि करते हुए पूज्यश्री–उनकी उपस्थिति मात्र से निर्मित आध्यात्मिक वातावरण में आत्म–विभोर हो झूमते हुए भक्तगण- यह सब दृश्य देखकर ऐसा कौन नास्तिक हृदय होगा जो आनन्द से डोल न उठे ।

पूज्य श्री के चहुँ ओर एक ऐसा निर्दोष प्रेममय आत्मीयतापूर्ण वातावरण हर समय छाया रहता है कि आनेवाले साधक एवं भक्तगण अपने अन्तर में दबी हुई दुःख, शोक और चिन्ताओं की गठरियाँ निस्संकोच होकर खोल देते हैं और हल्के हो जाते हैं । कुछ लोग कहते हैं—

" बापू ! आपके पास न मालूम ऐसा क्या जादू है कि हम फिर फिर से यहाँ आए बिना नहीं रह सकते ।"

पूज्य श्री कहते हैं—

" भाई, मेरे पास ऐसा कुछ भी जादू या मंत्र गुप्त नहीं है । कहो तो वह तुम्हें भी सिखा सकता हूँ । वह मंत्र यह है—

' वशीकरण मंत्र है प्रेम को '

बस इतना ही वह मंत्र है ।

' सबको प्यार की प्या...स !' सबको प्रेम चाहिये । वह प्रेम मैं लुटाता हूँ । सब कुछ पहले ही लुटा चुका ँ, इसलिये मुझे ऐसा अखूट प्रेम का धन ' आत्म–धन ' मिला है कि वह कितना ही लुटाओ, समाप्त नहीं होता। बाकी लोग अपने अपने स्वार्थ को नाप–तौल कर प्रेम करते हैं । इधर तो कोई स्वार्थ है नहीं । अपने तो सारे स्वार्थ उस परम प्यारे प्रभु के स्वार्थ के साथ एक कर दिये हैं जिसके हाथ में सबके प्रेम और आनन्द की चाबी है और उस प्रभु को हमने अपना बना लिया है, इसलिये मुक्तहस्त से प्रेम बांटता रहता । आप भी यह कला सीख लो सब को निस्वार्थ भाव से–आत्म-भाव से देखने और प्रेम करने की ।"

मगर सभी यह जानते हैं कि यह इतना सरल नहीं है । जिसने अपने सारे स्वार्थों की और अपने झूठे ' अहंकार ' की होली जला दी हो वही और केवल वही यह निस्वार्थ प्रेम बांटने का अधिकारी होता है । दूसरे तो साधारण ऋद्धि सिद्धियों में ही फंसकर रह जाते हैं । माया से पार होना कोई सरल कार्य नहीं है !

त्रिगुणमयी माया से पार हुए अपनी आत्म–मस्ती में रमते हुए ऐसे महापुरुष की कृपा कटाक्ष की एक किरण भी जिसको मिल जाती है उसके भीतर ऐसा आनन्द का सागर लहराने लगता है कि संसार के

श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कहे जाने वाले भोग भी उसको तिनके की नांई तुच्छ लगते है ।

इस आश्रम की स्थापना से पूर्व पूज्यश्री डीसा (गुजरात) में विराजते थे । वहाँ आश्रम में ज्यों ज्यों लोगों का आना जाना बढने लगा त्यों त्यों लोगों को पूज्य श्री के भीतर जिस परम महानता का फूल खिल उठा था उसकी सुगंध फैलने लगी । पूज्य श्री की कृपा–दृष्टि से कईयों को ध्यान के गहरे अनुभव होने लगे । उस समय कुछ ऐसे भी लोग थे जो 'पूज्य श्री कैसे संत हैं' यह जानने के लिये आये थे अर्थात उनकी माप निकालने आए थे । अब अमाप की माप...! असीम को मापने सीमित बुद्धिवाला जाय तो उसका क्या हाल होगा ? सो वही हाल हुआ टेकचन्दभाई का ।

टेकचन्दभाई का दुर्लभ अनुभव

संत की परीक्षा की दृष्टि से वहाँ टेकचन्दभाई

आए और उन्हें जो अनुभव हुआ वह उन्हीं के शब्दों में पढ़ें—

एक बार मैं उनकी माप निकालने के लिये उनके आश्रम जा पहुँचा । उस समय अपने आपको मैं भी एक संत ही मानता था । मनमें ऐसा ही था कि कुछ तर्क–वितर्क करके उन साधु की बोलती बंद कर देंगे । मगर जब मैं वहाँ पहुँचा और थोड़ी देर बैठा तो उनसे तर्क–वितर्क करने की सब तैयारी ही भूल गया । उनकी आँखों से ज्यों ही मेरी आँखें मिली तो मैं चमत्कृत सा हो गया !

अरे, जिनको मैं एक साधारण साधु समझ रहा था वे तो इस नवयुवावस्था में कोई छुपी हुई महान् आध्यात्मिक विभूति है ! फिर तो मैं हर समय पूज्य श्री की सेवा के बहाने वहाँ पहुँच जाता और बड़ा प्रेम व मधुर वाणीभरा अमृतोपदेश उनसे सुन कर सारी थकान भूल जाता । पूज्यश्री की सामान्य सेवा

से भी साधना में मुझे ऐसे लाभ हुए कि जो अनेक वर्षों तक जंगलों में भटकने के बाद भी साधकों को दुर्लभ होते हैं ।

एक बार रात्रि को काफी देर तक मैं पूज्य श्री के सम्मुख बैठा सत्संग सुन रहा था । एकाएक पूज्यश्री ने कहा—

“इधर उधर क्या देखना ? स्वयं ही सब कुछ बना बैठा है और दीन-हीन अपने को मान रहा है । तेरी ही शक्ति से यह सारा चराचर जगत गतिशील हो रहा है । तुझे किसका भय ? जो कुछ है तुम्ही हो । तुम्हारे सिवाय कोई अन्य है ही नहीं । निर्भय रहो, जाओ ।”

उस रात को पूज्य श्री की दृष्टि एवं वाणी द्वारा जैसे अगाध शक्ति मेरे में प्रवेश कर गई थी । हर्षो-ल्लास से हृदय उछलने लगा । शरीर एकदम हल्का फूल सा लगने लगा और शरीर के रोम रोम में उस

समय मैं इतनी प्रसन्नता अनुभव कर रहा था जितनी जीवन में आज तक नहीं की थी ।

मुझे वस्तुतः ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे यह समस्त जगत मेरी ही आज्ञा में चल रहा है और मैं जो कहूँ वह टल नहीं सकता, होकर ही रहेगा । जैसे कोई शराब पीकर झूमता हुआ जाता है वैसी ही उस समय मेरी चाल थी । रास्ते में एक पागल सी औरत जो हमेशा उसी जगह बैठा करती थी, और यह बाद में मुझे पता लगा कि वह एक मस्त फकीर थी, वह मुझे देखकर भारी आवाज में बोली——

“क्यों अबे ऽऽऽ, आज तो संत के पास से खूब माल मार लाया है ऽऽऽ ! तभी तो तेरे पैर ठीक से जमीन पर नहीं पड रहे हैं ।”

मैं तो सुना अनसुना करके झूमता हुआ अपने घर की ओर चल पड़ा । वह मस्ती कई दिन तक बनी रही ।

उस दिन मुझे अनुभव हुआ कि महापुरुष यदि चाहें तो अपनी दृष्टि मात्र से किसी को भी अपनी उस आत्म मस्ती का स्वाद चखा सकते हैं–मगर यदि वह सत्पात्र नहीं हुआ तो वह उसे सम्हाल नहीं सकेगा ।

और मेरे से भी ऐसी ही भूल हो गई । मैं कुछ बातों में पूज्य श्री की अवज्ञा कर गया । उन भूलों के कारण उस ब्रह्मानन्द की उधार मस्ती की झलक को टिका नहीं पाया और उसके कारण फिर बहुत भटकना पड़ा ।...घर बार छोड़ दिया । कई महीने हरिद्वार आदि कई स्थानों में भटकता रहा । बाल बढ गए । गुरू आज्ञा की अवहेलना के प्रायश्चित स्वरूप रोते रोते आँखें सूज गई ।

एक बार ऐसे ही किसी साधु की कुटिया के बाहर बैठा बैठा मन ही मन गुरूदेव का स्मरण करते करते ध्यानस्थ हो गया । थोड़ी ही देर बीती थी कि इतने

में दो तीन लोग रोते हुए आकर मेरे सामने खड़े हो गए । एक की अंगुली को बिच्छु ने काट खाया था और वह असहनीय वेदना के कारण रो रहा था । मेरा ध्यान टूटा तो उसके हाथ की मुडी हुई अंगुली पर मेरी दृष्टि पड़ी । उन लोगों को यह आशा थी कि यह जो नया बाबा यहाँ आया हुआ है वह जरूर बिच्छु डंक की वेदना मिटा सकता है । मुझे उसकी स्थिति पर दया आ गई और मैंने गुरूदेव का स्मरण करके उसकी अंगुली पकड़कर सीधी कर दी । गुरूकृपा से अंगुली सीधी हो गई और उसकी बिच्छु डंक की सारी वेदना जाती रही ।

पूज्य श्री की कृपा से इस प्रकार मेरे जीवन में कई चामत्कारिक अनुभव हुए हैं । आखिर मेरा यह तपस्यापूर्ण पश्चाताप करना सफल हुआ और पूज्य श्री ने अब मुझे फिर से करुणा करके अपना लिया है । घर–दुकान आदि की सारी बिगड़ी हुई परि-

स्थितियाँ फिर से सम्हल गई हैं। मगर यह मुझे अच्छी प्रकार अनुभव हो गया है कि :

गुरु बिन भवनिधि तरहिं न कोई ।
चाहे विरंची (ब्रह्मा) शंकर सम होंवहि ॥

टेकचन्दभाई की तरह ही और भी कई साधक पूज्य श्री की कृपा कटाक्ष के पात्र बनकर आज अपना आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

—श्री योगवेदान्त सेवा समिति

✻ निर्भय–योग ✻

मानव खोजन मैं चला, मानव का बड़ा सुकाल ।
जिसको देखे हृदय ठरे, उसका भया अकाल ॥

फकीर की खोज

आपने सुनी होगी वह बात एक फकीर की जो एक मेले में दिन के समय जलती हुई लालटेन लेकर घूम रहा था। कभी कभी वह किसी व्यक्ति के चेहरे के पास लालटेन ले जाता–उस व्यक्ति को घूर घूर कर देखता और आगे चल पड़ता। सूर्य चमक रहा है, फिर भी यह फकीर दिन में लालटेन जला कर क्या ढूंढ रहा है? लोगों को बडा आश्चर्य हुआ। किसी ने उससे पूछा–"बाबा, क्या ढूंढ रहे हो?"

बाबा बोला–"आदमी।"

इतने सारे आदमी घूम रहे हैं मेले में और

बाबा को कोई आदमी नहीं दिखाई दे रहा है ! लोगों ने समझ लिया कि यह कोई पागल है ।

फकीरों की अटपटी क्रिया जब हमारी बुद्धि में नहीं बैठती तो हम उन्हें पागल कह देते हैं और अपने को समझदार मान लेते हैं। लेकिन वास्तविक समझ क्या है—इसका हमें पता ही नहीं । आप भी उस फकीर को पागल कहेंगे, परन्तु जरा अपने जीवन में झांककर देखें—गहराई से- क्या हम आदमी हैं...?

आप क्या है ?

एक और बात सुनी होगी आपने। एक घर में कोई चोर घुस गया। पत्नी थोड़ी आवाज सुनकर जाग उठी और अपने पति को जगाते हुए बोली— " उठोजी, मालूम होता है घर में कोई चोर घुस गया है। "

पति यह सुनकर घबरा गया और बोला—" हाँ... चो...र ! तो बुलाओ किसी आदमी को। "

पत्नी बोली—" आप क्या हैं ? "

उसे पता ही नहीं कि मैं भी तो आदमी ही हूँ ।

आपको भी कोई पूछें कि आप क्या हैं तो आप कह तो देंगे कि हाँ मैं आदमी हूँ, परन्तु...।

निर्भयता ही जीवन है

कितना भयभीत जीवन हो गया है आज मनुष्य का ! जीवन के पल—पल पर भय छाया हुआ है। कहीं ऐसा न हो जाय, कहीं वैसा न हो जाय, कहीं चोरी न हो जाय, कहीं मित्र न बिछुड जायं, कहीं अपमान न हो जाय, कहीं बुढापा न आ जाय; कहीं व्यापार में घाटा न पड़ जाय ! जड़ वस्तुओं को सम्हालते हुए ही हमारा सारा जीवन बीत जाता है—उन वस्तुओं को उस इज्जत को उन रिश्तेदारों को—जो एक दिन बिछुड़ने ही वाले हैं। जो जो हमने बाहर से इकट्ठा किया है, मौत एक दिन सब हमसे छीन लेगी ।

सारा जीवन मनुष्य का चिन्ता से भरा हुआ है। जीवन में निष्फिक्रता कहाँ है? इतना भयभीत जीवन! जीवन में निर्भयता कहाँ है? और निर्भयता आए बिना सुख कहाँ?

निर्भयता ही जीवन है, भय ही मृत्यु है।

स्वामी रामतीर्थ कहा करते थे :

" यदि तुमको स्वर्ग का फरिश्ता बनाया जाय या मोतियों का कोष दिया जाय और तुम्हारी प्रसन्नता या निर्भयता पर रोक लगाई जाय, तो वह पद या मोतियों का कोष भी ठुकरा देना।"

प्रसन्नता ही तो जीवन का सुगंधित पुष्प है! तुम यदि प्रसन्न हो तो सारा जहाँ प्रसन्न होने को बाध्य है। सचमुच, यदि तुम प्रसन्न हो तो दुखी व्यक्ति भी तुम्हारे पास आकर प्रसन्न हो उठेगा–वह अपना दुःख भूल जाएगा। और यदि तुम भयभीत हो तो कुत्ते का पिल्ला (कुरकुरिया) भी तुम्हारे

पीछे दौड़कर तुम्हें भयभीत करने का मजा ले लेगा। जो भयभीत है उसे लोग और भयभीत करते हैं और जो निर्भय है उसके आगे संसार झुकता है।

पहले अपने स्वरूप को जान लो

फकीर को यह देखकर दया आती है कि तुम्हारे भीतर वह निर्भय स्वरूप आत्मदेव बैठा हुआ है, फिर भी तुम भयभीत हो। अपने निर्भय स्वरूप को जानो और सब निर्बलताओं से मुक्त हो जाओ। उखाड़ फेंको अपनी सब गुलामियों को-कमजोरियों को–दीन–हीन जीवन को घसीटते हुए जीना भी कोई जीवन जीना है? मैं तो कहूँगा, सारे कार्यों को एक तरफ रखकर पहले अपने स्वरूप को जान लो; फिर देखो कि तुम्हारे करने के लिये कोई कार्य बचा भी है! हाथी के पैर में जैसे सबका पैर आ जाता है वैसे ही यह एक कार्य कर लिया तो सारे कार्य हमारे पूरे हो जाएंगे। हम जड़े छोड़कर पत्तों को

पानी देते हैं । हम सारे कार्य पूरे करने जाते हैं और एक भी पूरा नहीं हो पाता । जीवन के अन्त में पाते हैं कि सब अधूरा पड़ा है और जिसे पूरा मान रहे थे वह भी अब बिछुड़ रहा है । कार्य पूरा नहीं हुआ–जीवन पूरा हो गया ।

पूरे जगत के कार्य कोई भी कभी नहीं कर सका ।
शीतोष्ण से सुख दुःख से, कोई भला क्या तर सका ॥
निस्संग हो, निश्चिंत हो, नाता सभी से तोड़ दे ।
करता भले रहे देह से, ममता अहंता छोड़ दे ॥

एक राजा की कथा

जगत का कोई राजा भी सारे काम पूरे करके नहीं मरा ।

राजा रहूगणने खूब राज्य भोगा, मगर सुख कहाँ ? क्योंकि जीवन का महत्त्वपूर्ण कार्य अधूरा पड़ा था । बाहर से दिखता था कि राजा है–बहुत सुखी है, परन्तु वह दुःखी था । किसीने कहा था कि किसी

तत्त्वज्ञानी अलमस्त फकीर के पास जाओ, उसके मार्ग दर्शन में चलो, फिर तुम्हारे सब काम पूरे हो जाएंगे । तभी तुम पूर्ण सुखी हो पाओगे ।

रहूगण चल पड़ा एक पालकी में बठकर किसी आत्मवेत्ता महापुरुष की खोज में । पालकी उठाने वाले चार कहारों में से एक व्यक्ति बीच में बीमार पड़ गया । उसकी जगह पालकी कौन उठाएं–तो उसके बाकी व्यक्ति गए और एक व्यक्ति को साथ ले आए । वे थे 'जड़ भरत' । बाहर से जड़ की भांति व्यवहार था उनका, परन्तु भीतर से पूर्ण सजग थे । जोत दिया उनको पालकी में ।

पालकी आगे चल पड़ी । जहाँ जमीन पर कोई कीड़ा मकोड़ा आता तो जड़ भरत उसको बचाने के लिये उछल पड़ते । उनके उछलने से पालकी हिलती और राजा का सिर पालकी की छत से टकरा जाता । राजा तो फिर राजा ही था । वह डांटकर कहता–

" अरे, तुम जानते नहीं में कौन हूँ ? ठीक प्रकार से क्यों नहीं चलता ? अब यदि ठीक से नहीं चला तो पालकी से उतर कर ऐसी मार मारूंगा कि तेरे होश ठिकाने आ जांएगे ।"

इस प्रकार जड़ भरत कई बार उछले और कई बार राजा ने उसे पीटने की धमकी दी । जड़ भरत तो ज्ञानी महापुरुष थे । उन्होंने देखा कि राजा अपने व्यवहार से पाप अर्जन कर रहा है । यह मेरे कंधों पर चढ़कर यहाँ तक आया है–इसका अकल्याण हो, यह ठीक नहीं । अतः वे बोल पड़े–

" राजन् ! पालकी में बैठा हुआ एक मिट्टी का पुतला पैदल चलते हुए दूसरे मिट्टी के पुतले को पीटेगा तो मेरा क्या बिगड़ेगा ? आत्मा का कभी कुछ न बनता है न बिगड़ता ही है । राजापना, प्रजापना, स्वामीपना, सेवकपना, आधि–व्याधि, भूख–प्यास, प्रेम–कलह, इर्ष्या–द्वेष, मान–अपमान ये सब

धर्म देहाभिमान को लेकर उत्पन्न होने वाले जीव में रहते हैं । मुझ में इनका लेश भी नहीं है । मैं मत्त–उन्मत्त और जड़ के समान अपनी ही मस्ती में–अपने आप में ही रहता हूँ ।

जड़ भरत का यह ज्ञान भरा कथन सुनकर राजा चौंक पड़ा । वह समझ गया कि भूलसे इन ज्ञानी महात्मा को पहचान नहीं पाया और बाहर से अज्ञानी और प्रमादी जैसा इनका व्यवहार देखकर धोखा खा गया हूँ । तुरंत कूदकर वह पालकी से नीचे उतरा और क्षमा माँगते हुए कहने लगा–

" भगवन् ! मैं अपने राजापने के अहंकार में मदमत्त रहने से आप जैसे ज्ञानी महात्मा को पहचान नहीं पाया था । मै आप जैसे महात्मा की खोज में ही जा रहा था । मुझे क्षमा करें अपनी अक्षम्य भूलों के लिये और कुछ ज्ञानामृत का पान करावें ।"

तब जड़ भरत ने राजा को ज्ञानोपदेश दिया

और अंत में बोले–" हे राजन् ! ज्ञानी महापुरुषों के चरणों की धूल से अपने को नहलाए बिना केवल तप, यज्ञ, दान, अतिथिसेवा, वेदाध्ययन या देवताओं की उपासना आदि किसी भी साधन से यह परमात्म–ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता । "

राजा होने से निर्भयता नहीं आती, नेता होने से निर्भयता नहीं आती, पैसा होने से निर्भयता नहीं आती, प्रसिद्धि होने से निर्भयता नहीं आती, अधिक लोग मानने लगने से निर्भयता नहीं आती, अस्त्रशस्त्रों से सुसज्जित होने से भी निर्भयता नहीं आती । निर्भयता तो भीतर की स्थिति है । निर्भयता तो जो भीतर से निर्भय हो चुके हैं, उनके संग करने से आती है ।

राजा रहूगण भी निर्भय नहीं था, परन्तु अपने पास कुछ भी नहीं था तो भी जड़ भरत निर्भय थे । जड़ भरत जैसे फकीर ही जिन्होंने अपने देहध्यास को भीतर से मिटा डाला है और अपने आत्मस्वरूप में निःशंक रूप से स्थित हो चुके हैं, वे परम निर्भय हैं ।

जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि

मानव जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है ? यदि एक शब्द में कहना हो तो 'परम निर्भयता' । बाकी सारी उपलब्धियां नहीं जैसी हैं । और ध्यान रहे, जो परम निर्भय हो गया अपने आत्मस्वरूप को जानकर, उसे फिर किसी प्रकार की कोई उपलब्धि करना शेष भी नहीं रहता । उसके तो दर्शन मात्र से, आशीर्वाद मात्र से संसार के लोगों को उनकी मनचाही उपलब्धियां होने लगती हैं ।

परम निर्भयता को उपलब्धि कहना भी ठीक नहीं, क्योंकि यह कोई बाहर से नहीं आती है । यह भीतर ही से प्रकट होती है, केवल किसी परम निर्भय महा-पुरुष का संग मिल जाय और उसकी कृपा दृष्टि के हम पात्र बन जायं ।

निर्भयता भीतर की चीज है

ज्ञानी महापुरुष ही सच्चे फकीर होते हैं । वे

ही परम निर्भय होते हैं । कोई तलवार या बन्दूक रखने वाले तो निर्भय होते ही होंगे इस भ्रांति में भी नहीं पड़ना । निर्भयता भीतर की चीज है ।

मा. आबू की गुफा का एक प्रसंग

मैं जब आबू की गुफा में रहता था तो वहाँ पहाड़ के निर्जन और भयावह जंगल में घूमने निकल पडता था । एक बार एक मिलीटरी का अफसर भी साथ हो लिया था । उसने कहा–"स्वामीजी ये तो आप साथ में हैं, नहीं तो ऐसे भयावह स्थान में बिना बन्दूक के तो पैर भी न रखूं । इधर कोई रीछ या शेर आ जाय तो हम बचाव कैसे करें ?"

६–६॥ फीट का हिम्मतवर मिलीटरी का जवान भी बन्दूक है तो निर्भय है अन्यथा वह भी भयभीत है । मैंने उससे कहा–"सर्वत्र विद्यमान जिस आत्म-सत्ता से शेर या रीछ चलता है उसीसे तुम चलते हो । जब वही सत्ता सर्वत्र विद्यमान है और उसी

से सब कार्य हो रहा है तो तुम भयभीत क्यों होते हो ? यदि तुम निर्भय हो तो बिना तुम्हारी इच्छा के मजाल है कोई तुम्हारा बाल भी बांका कर सके ।"

बन्दूक या रायफल जैसे बाहरी साधनों के आधार पर टिकी निर्भयता निर्भयता नहीं है । वह निर्भयता निर्भयता नहीं है निर्भयता के नाम पर धोखा है । जब तक भीतर के परम निर्भयस्वरूप आधार आत्म-देव की पहचान न हो जाय तब तक बाहर से कितना ही शक्तिशाली दिखता हुआ व्यक्ति भी शक्तिहीन है, धनी दिखता हुआ भी निर्धन है, प्रतिष्ठित दिखता हुआ भी दीन है, सुखी दिखता हुआ भी दुःखी है, सुरक्षित दिखता हुआ भी पूरा परेशान है, निर्भय दिखता हुआ भी भयभीत है ।

स्वामी रामतीर्थ के जीवन की घटना

स्वामी रामतीर्थ जंगलों और पहाडों में अकेले निहत्थे घूमते थे । एक बार उनको सामने से ४–५

भालुओं का टोला अपनी ओर आता नजर आया। उन्होंने बड़े साहस से उनकी ओर निहारते हुए ओम्–ओम् का उच्चारण किया तो सब भालू उनका रास्ता छोड़कर भाग खड़े हुए।

पुरुषार्थ क्या है?

रामतीर्थ के पास बन्दूक वाली थोपी हुई निर्भयता नहीं थी। वे भीतर से निर्भय थे। जो भीतर से निर्भय होता है उसके सम्मुख रींछ और सिंह जैसे खूंख्वार और हिंसक पशु भी अपना हिंसक स्वभाव भूल जाते हैं, साँप और बिच्छु भी अपना विषैला स्वभाव भूल जाते हैं, चोर और डाकू भी अपना क्रूर स्वभाव भूल जाते हैं।

परम निर्भयता तो ऐसा अमृत है जहाँ से मृत्यु भी लौट जाती है, जहाँ यम का डंड़ा भी निस्तेज हो जाता है, जहाँ अस्त्र–शस्त्र कुण्ठित हो जाते हैं, जहाँ प्रकृति भी अपने नियम बदल कर व्यवहार करती

है। ऐसी कोई शक्ति नहीं है–ऐसा कोई गुण नहीं है जो परम निर्भयता से पैदा न होता हो और ऐसा कोई दुर्गुण नहीं है–कमजोरी नहीं है जो भय से पैदा न होती हो। सारी दुर्बलता, सारा अशुभ, सारे दुर्गुण भय की पैदाइश है। भय मनुष्य जीवन का कलंक है। सारे भयों को जीवन से उखाड़ फेंकना ही पुरुषार्थ है।

क्यों दीन बनते हो?

किसी भी प्रकार की चाह हमको दीन बना देती है। परे फेंको ऐसी इच्छाओं को जो तुम्हें दीन बनाती हैं। दो रोटी और दो गज कपड़े के लिये दीन बनते हो! अरे, जिसने यह शरीर दिया है वह रोटी और कपड़ा तो देगा और देगा ही।

शरीर प्रकृति का है और प्रकृति के शरीर के निर्वाह की चिन्ता प्रकृति करेगी ही। क्या इन तुच्छ चीजों के लिये तुम अपने भीतर छिपे अमरत्व के खजाने अपने आत्मदेव को जानने का लक्ष्य छोड़ दोगे?

वह तुम्ही हो ?

अरे, जरा अपने भीतर छिपी आत्मदेव की सर्वशक्तिमत्ता का अनुभव तो करो ! जिसके भय से ये चाँद सितारे चमक रहे हैं, जिससे शक्ति लेकर यह सूर्य प्रकाशित हो रहा है, जिसकी सत्ता से ही यह सारा जगत प्रपञ्च कार्य करता नजर आ रहा है, वह सर्वशक्तिमान् परमात्म देव तुम्हारे भीतर छिपा है और छिपा क्या है–वह तुम्ही हो । एक बार अपने स्वरूप को तो जानो । आज जिन देवी देवताओं की उपासना तुम करते हो, कल वे तुम्हारी कृपा कटाक्ष के भिखारी बने तुम्हारे पीछे घूमते नजर आएंगे ।

सुखका सागर तुम्हारे भीतर है

तुम ईश्वरों के भी ईश्वर हो । बाहर कौन से ईश्वर को ढूँढ रहे हो ! ईश्वर तुम्हारे भीतर ही बैठा है । अन्तर्मुखी बनो, ध्यान करो, अपने भीतर गोता लगाओ । कहाँ संसारी तुच्छ विषयों में सुख ढूंढ रहे

हो ? सुख का सागर तुम्हारे भीतर लहरा रहा है ।

अपने भीतर के खजाने के द्वार जब खुलेंगे तो आप ही आप तुम एक मस्त निर्भय फकीर की भांति कह उठोगे:

बन्दगी का था कसूर, बन्दा मुझे बना दिया ।
मैं खुद से था बे खबर तभी तो सर झुका दिया ॥
वो थे न मुझसे दूर न मैं उनसे दूर था ।
आता न था नजर तो नजर का कसूर था ॥

अपने स्वरूप को जानो

अपनी जीवपने की परिच्छिन्नता से पीछा छुडाओ । अपने निर्भय आत्मस्वरूप में जागो । अपने को देह न मानो–

इस देह तलक सब सिजदे हैं,
इन सिजदों तक सब पर्दे हैं ।
जब पर्दा उठा तो आप हुए,
फिर आपको सिजदा कौन करें !

जब अपने ही घर में खुदाई है,
काबे में सिजदा कौन करे !
दिल में ख्याले सनम हो गए,
तो गैर की पूजा कौन करें !

निर्भय बनो

मैं चाहता हूँ कि तुम भीतर से ऐसे धनी हो जाओ कि किसी के भी आगे तुम्हें हाथ पसारने की आवश्यकता न पड़े, भीतर से ऐसी शक्ति का अनुभव कर लो कि किसी के भी आगे भयभीत होने की गुंजाइश न बचे, भीतर से ऐसी सुरक्षा का अनुभव कर लो कि बाहर के किसी सुरक्षा के साधन की ओर देखने की आवश्यकता न पड़े; तुम्हारी निर्भयता को देखकर सामने से आती हुई मौत भी भय से कांप उठे। आपको ऐसे निर्भय पद की प्राप्ति के पथ पर लिये मैं चल रहा हूँ।

मेरी सारी चेष्टाएं किस लिये ?

मैं तुम्हारे चेहरे पर उस परम निर्भयता का

ओज देखना चाहता हूँ। मैं तुम्हारी संसारी दीनता को जिसे आप मजबूती से पकड़े हुए हैं उसे मजबूती से हमेशा हमेशा के लिए छुड़ा देना चाहता हूँ। मैं न तुम्हें संन्यासी बनने के लिये कहता हूँ, न तुम्हें गृहस्थ बनने के लिये कहता हूँ। मैं केवल यही कहता हूँ कि जो तुम हो-वास्तव में, उसी का अनुभव कर लो। मेरी सारी चेष्टाएँ इसी के लिये हैं। इसीलिये तुम्हारी हंसी के साथ मैं भी हंस लेता हूँ, तुम्हारे रुदन के साथ में भी रोने का अभिनय कर लेता हूँ, इसी आशा में कि तुम्हारी इतनी-इतनी बातें मैं मान रहा हूँ तो किसी दिन तुम भी मेरी एक बात मान लोगे। अन्यथा मेरा हंसना रोना या अन्य व्यवहार करना तो उसी दिन पूरा हो गया था जिस दिन गुरुदेव की पूर्ण कृपा मुझ पर हुई थी। तुम्हारी सौ सौ बातें मानने से भी मेरा तो कुछ नहीं बिगड़ेगा, क्योंकि मेरा सारा बनना

बिगडना तो पहले ही पूरा हो चुका है; परन्तु तुमने मेरी एक भी बात मान ली. मेरे एक भी इशारे को टीक ढंग से समझ लिया तो तुम अपनी सारी दीनता को उतार फेंकोगे और अपने को परम स्वतंत्र–परम निर्भय और मुक्त स्वरूप अनुभव कर लोगे ।

इस जीवन में जाग जाओ

जरा सोचो इस बात को गंभीरतापूर्वक कि न जाने आज तक तुम कितने कितने जन्मों में भटकते आए हो । आज तक न जाने कितनों से सम्बंध बनाए हैं, कितनी बार धन की ढेरियाँ लगाई हैं, कितने ही प्रकार के मन्सूबे बांधकर उन्हें पूरा करने में जीवन के जीवन खो दिये हैं–फिर भी कहीं विश्रांति नहीं मिली–निर्भयपद में प्रवेश नहीं हुआ–मौत के भय से भागते ही रहे । इस प्रकार कब तक भागते रहेंगे । इस बार, इस जीवन में चेत जाओ । अब सुख के लिये बाहर दौडना छोड़ दो, क्योंकि बाहर

दौड़ दौड कर देख लिया, कभी सच्चा सुख मिला नहीं । अब भीतर जाएंगे–अन्तर्मुख बनेंगे. अपने भीतर छिपे आनन्द को जगाएंगे और जीवन और मौत से परे होकर इनके भी साक्षी अधिष्ठान अपने आनन्दमय आत्मस्वरूप 'निर्भय–पद' में जागेंगे ।

शिवोऽहम् ! शिवोऽहम् !! शिवोऽहम् !!!

* साधकों के अनुभव *

पूज्य गुरुदेवने मुझे मौत के मुंह से बचाया

मुझे मोरबी के पास नवलखी पोर्ट (बन्दरगाह) की स्कूल में प्रिन्सीपल पोस्ट के इन्टरव्यू के लिये जाना था। प्रिन्सीपल का पद था और ज्यादा तनख्वाह का आकर्षण तो था ही। इन्टरव्यू की तारीख से दो दिन पूर्व तक भी जाऊँ या नहीं जाऊँ इस बात का निर्णय नहीं ले पाया था।...मेरे लिये तो स्वामीजी... भगवान हैं...(गुरुदेव की कृपा का स्मरण कर जोशी जी अपने को थाम नहीं सके, उनका हृदय भर आया और माइक पर ही ये वाक्य बोलते बोलते रो पड़े। उनके रोने की आवाज से सभा का वातावरण भी बड़ा ही कारुणिक हो उठा है। अपने भर्राए हुए कंठ को ठीक करते हुए आगे कहने लगे) मनुष्य की बुद्धि कितनी सीमित है ? ये (पूज्य गुरुदेव) एक ऐसे

व्यक्ति हैं कि आप पहचानने में भूल कर जाएंगे- धोखा खा जाएंगे...(फिर से रुदन)...।

मेरे से निर्णय नहीं हो पाया तो मैं पूज्यश्री के पास आया। उस समय मुझे पूज्यश्री ने जो शब्द कहे, वे ही कहता हूँ :

"सत्संग का स्थान छोड़कर क्या चाण्डाल के घर भिक्षा लेने जायगा ? सत्संग छोड़कर स्वर्ग का राज्य भी मिलता हो तो उसे ठोकर मार देनी चाहिये।"

उस समय तो मैंने नहीं जाने का निर्णय लिया, परन्तु मुझे भीतर से इच्छा थी कि यह पोस्ट छोड़नी नहीं चाहिये। मैं हर वर्ष अहमदाबाद से श्रावण महीने में प्रभास पाटण में ज्योतिर्लिंग भगवान सोम-नाथ के दर्शन करने जाया करता था, अतः इस बार भी प्रभास पाटण गया। वहाँ से लौटते समय हालांकि इन्टरव्यू की तारीख तो निकल चुकी थी (जा चुकी थी), फिर भी नवलखी जाने की इच्छा तीव्र हो

उठी । इसलिये मैं अहमदाबाद न आकर राजकोट ही उतर गया और वहाँ से नवलखी जाने के लिये मोरवी जाने वाली बस में बैठ गया ।

बस में बैठते ही भीतर अंतर्मन से आवाज उठी– "नीचे उतर !" में नीचे उतर आया, परन्तु फिर से लोभ जगा और फिर बस में चढ गया । आश्चर्य की बात यह हुई कि बस में जितनी तीव्र इच्छा से चढ़ा था उससे भी इस बार दुगुने वेग से भीतर से वही आवाज आई–'नीचे उतर'। मैं समझ नहीं पाया कि यह क्या हो रहा है । फिर नीचे उतरा, बस रवाना होने में विलम्ब था । अतः थोडी देर नीचे रुका रहा, परन्तु फिर से मेरे मन को लोभ ने आ घेरा और मैं फिर बस में चढ़ गया । बैठा ही था कि परेशान हो गया । जैसे कोई भीतर से कहे जा रहा है 'नीचे उतर' । जब मैं अधिक इस स्थिति को सहन नहीं कर पाया तो विवश होकर नीचे उतर आया और बस रवाना हो गई ।

बाद में अहमदाबाद वाली बस में बैठकर अहमदाबाद अपने घर लौट आया । दूसरे ही दिन रेडियो द्वारा समाचार प्रसारित हो गया कि गुजरात का प्रसिद्ध शहर मोरबी पानी में डूब गया । १० मिनट के अन्दर बांध टूटने से इतना पानी बहा कि लोगों को बचाव का भी मौका नहीं मिला । यह पिछले वर्ष की ही घटना है ।

वाह मेरे गुरुदेव ! (भाव भरे शब्दों में) मैं ने तो मरने का ही रास्ता पकड़ा था । मौत सामने खडी थी जो मुझे नहीं दिखाई दे रही थी, परन्तु आपको दिखाई दे रही थी । अतः आपने मोरवी की बस में नहीं बैठने दिया । यदि भगवान स्वरूप मेरे गुरूदेव की कृपा नहीं होती तो आज इस रूप में मैं आपके सम्मुख उपस्थित नहीं हो पाता ।

ध्यान–अमृत का चमत्कार

इसी प्रकार एक बार और पूज्य श्री ने मुझे

मौत के मुंह से बचाया था । उस दिन शाम को साईकल पर मैं आश्रम से घर की ओर लौट रहा था । साइकिल चलाते चलाते मुझे मेरे सिर के ऊपर एक वर्तुलाकार (गोल) प्रकाश बिजली की भांति चमकता हुआ नजर आया । थोड़ी देर बाद वही प्रकाश का गोला बांई और दिखने में आया । मैं चौंक पड़ा कि यह सब क्या हो रहा है ! बाकी चारों ओर घन घोर अंधेरा छाया हुआ था । ध्यान में तो ऐसे अनुभव होते ही रहते हैं, परन्तु खुली आँख आज यह सब दिख रहा था । एकाएक मैंने देखा कि वही गोल प्रकाश का घेरा जमीन पर मेरे से कुछ ही फुट आगे दिखा और उस प्रकाश में मैंने देखा एक भयंकर काला नाग । नाग (सर्प) बीच रास्ते से गुजर रहा था और मैं अगर ब्रेक नहीं लगाता साईकिल को, तो आगे का पहिया उसके ऊपर आने वाला था और प्रतिक्रिया में वह विषधर मुझे

डसे बिना नहीं छोड़ता । परन्तु वाह मेरे गुरूदेव ! उन्होंने मुझे ऐसा ध्यान अमृत पिला दिया है कि समय समय पर ऐसे खतरनाक प्रसंगों पर भी मेरे को मेरी रक्षा की चिन्ता नहीं रहती ।

ध्यान में शरीर के भीतर का दृश्य देखा

ध्यान तो कितने ही लोग करते हैं अपने बल पर, परन्तु उसमें जितना परिश्रम लगता है उतना फल नहीं पाते । और इधर पूज्यश्री में जिसे प्रेम और श्रद्धा होकर अहोभाव करना आ जाता है, उसे फिर ध्यान के लिये कुछ करने की आवश्यकता नहीं पडती । उसे ध्यान के लिये कोई मेहनत नहीं करनी पडती ।

आश्रम के वट वृक्ष के नीचे एक बार पूज्य श्री बैठे हुए थे । अचानक मुझे उन्होंने कहा :

“अरे जोशी, यहाँ बड़ के नीचे आकर बैठो । देखो कितनी पावन जगह है यह !”

पूज्यश्री तो वहाँ से उठकर चले गए और मैं बड़ के नीचे बैठा तो एक दम से मन शांत होने

लगा । थोड़ी ही देर में मैं देह का भान भी भूल गया और ध्यान की गहराइयों में उतरता चला गया। सारे शरीर के रोम रोम में 'राम–राम–राम–राम' की गुंजार होने लगी ।

मैं उस समय इतना अन्तर्मुख हो गया था कि बाहर का मुझे कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था, परन्तु भीतर से पूरा शरीर दिखाई देने लगा । रक्त की एक–एक नस–नाडी, उसमें बहता हुआ खून, धडकता हुआ हृदय, हवा के वेग से फड़कते हुए फैफड़े, पेट की भोजन नलिका में सरकता हुआ अन्न आदि सब स्पष्ट नजर आ रहा था । कोई वैज्ञानिक या डाक्टर भी इतना स्पष्ट शरीर के भीतर का दृश्य नहीं देख सकता जितना उस दिन मुझे दिखाई दे रहा था ।

पहले ऐसा सुना था कि योगी चाहे तो ऐसा अपने शरीर का संस्थान देख सकता है । परन्तु मैंने तो ऐसी योग साधना कभी की नहीं थी, फिर भी

ऐसा अनुभव ! यह मेरे गुरुदेव की कृपा दृष्टि का ही फल था । ऐसे ऐसे और भी कई अनुभव समय समय पर मुझे होते रहते हैं ।

पूज्य श्री की कृपा से आज मेरा सत्ता या पैसे का लोभ काफी हद तक गल चुका है । आश्रम ही मेरा घर है, पूज्यश्री ही हमारे पिता, भगवान और सब कुछ हैं । जितना जितना मैं अपने भीतर उतरा हूँ और यहाँ देखा सुना तथा अनुभव किया है, उससे इतना ही सार निकाल पाया हूँ कि यहाँ आकर कईयों ने पूज्य श्री की कृपा से इतना इतना पाया है कि जितना कोई संसार का सम्राट भी नहीं पा सका होगा ।

ऐसे श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरूदेव के चरणों में मेरे कोटि कोटि प्रणाम !

वाह ! वाह !! वाह मेरे गुरूदेव !!!

दिलीपभाई जोशी, प्राध्यापक
एन. एम. हाई स्कूल, साबरमती

जाको राखे साईयाँ

७ मार्च १९८० की यह घटना है। पूज्यश्री उस दिन सूरत से गांधीधाम सौराष्ट्र एक्सप्रेस ट्रेन द्वारा पधार रहे थे। दर्शनार्थियों एवं भक्तों की भारी भीड़ अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर जमा थी। 'संत आशाराम बापू की जयजय कार' से पूरा स्टेशन गुंजायमान हो रहा था। रेलवे स्टेशन के कई अधिकारी भी यह दृश्य देख रहे थे। इस प्रेम भरे वातावरण को देखकर सबकी यह हार्दिक इच्छा हो रही थी कि पूज्य श्री की गाड़ी अधिक समय तक वहीं रुकी रहे।

पूज्य श्री ने सत्संग के कुछ मधुर बोल सुनाए और प्रसाद बंटवाई त्योंही गाडी ने सीटी दी और चल पड़ी। मगर भावुक हृदय भक्तों को यह स्वीकार नहीं था। वे भी धीरे धीरे गाड़ी के साथ दौड़ने लगे। इस भाग–दौड में एक १८ वर्ष की लड़की 'मायाकुमारी' लीलाराम धूलाणी (सैजपुर बोघा अहमदाबाद) न जाने कब प्लेटफार्म के नीचे चलती हुई गाड़ी की पटरी पर गिर पड़ी। जंजीर खींची गई, मगर तब तक गाड़ी करीब २०० गज आगे बढ़ चुकी थी।

पता लगते ही ड्राईवर ने गाड़ी रोक दी। सबके हृदय धड़क रहे थे–इस आशंका से कि वह लड़की अब गाड़ी के नीचे से जीवित निकलेगी या मुर्दा ? पूज्य श्री भी अपने डिब्बे से नीचे उतरे। लड़की को गाड़ी के नीचे से खींच कर बाहर निकाला गया। देखा तो वह सही सलामत थी। एक खरौंच भी उसके किसी अंग को नहीं लगी थी। उसे जीवित देखकर 'पूज्य श्री' के जय घोष से फिर से सारा स्टेशन गूंज उठा। रेलवे स्टेशन कर्मचारी आपस में कह रहे थे कि इस प्रकार ट्रेन के नीचे से लड़की का जीवित निकलना एक महान् आश्चर्य है। यह कोई इन संत की ही अद्‌भुत शक्ति का चमत्कार है! अन्यथा इतनी दूर तक गाड़ी चलने के बाद भी इसको चोट न लगे और यह जीवित अवस्था में निकले यह हो नहीं सकता था।

ज्योंही लड़की ने पूज्य श्री के दर्शन किये तो तो उनकी करुण कृपा को याद कर वह रो पड़ी ।

हमने जब उस लड़की से पूछा कि तुम कैसे बची तो उसने कहा–

" जब मैं किसी के धक्के से गाड़ी की पटरी पर गिरी तो मैंने समझा अब मैं मर जाऊंगी, तब मैं ' सांई–सांई ' पुकार उठी । अचानक मैंने देखा कि सांई आए और उन्होंने अपने हाथों से मुझे धक्का देकर रेल की पटरी से हटा दिया और बोले–"घबराती क्या है ? तुझे ऐसे कौन मार सकता है ? " मेरे देखते देखते कई डब्बे आगे सरकते गए–मेरे शरीर को छूकर, परन्तु मुझे किसी ने क्षति नहीं पहुँचाई । मैं तो बस, उस समय सांई के ध्यान में मग्न हो गई थी । "

विचित्र है सांई की कृपा ! जाको राखे सांईयाँ मारी सके ना कोय–यह लोकोक्ति उस दिन हमने प्रत्यक्ष चरितार्थ होते देखी ।

होतचन्द खानचन्द दुलाणी
१४ कुबेरनगर जूतीचाल, सैजपुर बोघा, अहमदाबाद.

* वे क्या हैं ? *

आध्यात्मिकता की सर्वोत्कृष्ट अवस्था पर पहुँचे हुए प्रातः स्मरणीय संत श्री आशारामजी द्वारा समाज के लिये आज जो महत्वपूर्ण कार्य हो रहा है, वह वस्तुतः सराहनीय है । आशारामजी को तो मैं बहुत ही निकट से जानता हूँ । उनके शब्द–शब्द में निर्भयता टपकती है । यह निर्भयता उन्होंने बहुत कुर्बानी करके पाई है । वे निर्भय हैं, इसलिये उनका संग करने वाला भी निर्भय हो जाता है ।

भाई, मैंने तो देखा है कि वे बडे सरल हैं, उदार हैं, लोगों के प्रति क्या समस्त प्राणी समुदाय के प्रति करुणावान हैं–यह भी कहने के लिये कहता हूँ । वस्तुतः वे क्या हैं–यह तो उनके संग में रहकर ही जाना जा सकेगा ।

पूज्य पाद श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री शंकर महाराज
शंकर आश्रमः पाल्डी, अहमदाबाद–७

ध्यान में काले राक्षस से भेंट

ऐसे तो ध्यान में मुझे कई प्रकार के अनुभव होते है, परन्तु उनमें से यहाँ एक दो का ही उल्लेख करूँगा ।

जब मैं ध्यान में बैठता हूँ तो धीरे धीरे शरीर का भान भूलने लगता हूँ । फिर ऐसा लगता है जैसे कमर से ऊपर मस्तिष्क की ओर कोई शक्ति सरकती चली जा रही है । कभी कभी शरीर डोलने लगता है, फिर क्या क्या होता है यह मुझे स्मरण नहीं आता–इतना अवश्य ख्याल में रहता है कि उन क्षणों में मैं बहुत आनन्द में रहता हूँ । कभी कभी तो ३–३ घंटे उसी अवस्था में बैठा रहता हूँ । ध्यान में पूज्य श्री के भी दर्शन होते हैं ।

अभी कुछ दिन पूर्व मैं अपने घर माणसा (जि. मेहसाना) में ध्यान में हमेशा की भाँति बैठा था। ध्यान में मुझे अनुभव हुआ कि मैं आश्रम में पहुँचा

हूँ । यहाँ मुझे पूज्यश्री के दर्शन हुए । दर्शन करके आश्रम के फाटक को पार कर ही रहा था तो सामने से एक ७ फीट लम्बा काला और डरावना व्यक्ति आता हुआ दिखाई दिया । पास आकर उसने मुझे कहा–'मैं तुमको मारूँगा ।' मैं भयभीत होने ही वाला था कि मुझे गुरूदेव का स्मरण हो आया । मैंने उससे कहा—

"मेरे गुरूदेव समर्थ हैं, उनके रहते तुम मेरा क्या बिगाड़ सकते हो ?"

इतना कहने के साथ ही मैंने देखा कि पूज्यश्री उस काले व्यक्ति के कुछ ही पीछे प्रकट हो गए हैं । वे दूर से ही मेरी ओर आते हुए बोले—

"घबराना नहीं, मैं आ रहा हूँ । निर्भय होजा, किसी की ताकत नहीं जो कोई तुम्हारा बाल भी बाँका कर सके ।"

पूज्यश्री को देखते ही वह काला–काला राक्षस जैसा व्यक्ति भाग खड़ा हुआ और अदृश्य हो गया ।

अभी कल ही १० दिसम्बर (१९८०) को मैं बड़ा हताश हो गया था। आर्थिक संकट, सामाजिक विरोध, सम्बंधियों की नाराजगी आदि से बड़ा चिंतित था। रात्रि को इसी चिंता का बोझ लिये हुए ध्यान में बैठ गया और गुरूदेव से प्रार्थना करने लगा कि 'गुरूदेव! आप पतित पावन हैं, अधम–उद्धारक हैं। मैं तो चारों ओर की प्रतिकूल परिस्थितियों से ऐसा घिर गया हूँ कि अब कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है। आप ही मेरे रक्षक हैं। मेरी जीवन डोरी अब आपके ही हाथ में है।'

कुछ देर बाद ध्यान से उठकर बिस्तर पर सो गया। जब आँखें बन्द होने ही वाली थी कि मैंने देखा गुरूदेव की सौम्य मूर्ति मेरे सम्मुख साक्षात् खडी है। वे मुस्कुरा रहे हैं। फिर मुझे आश्वासन देते हुए बोले—

"बस, इतनी सी कठिनाइयों से घबरा गया! ये तुम्हारे पूर्व के दुष्कर्म और पापकर्म धुल रहे हैं।

सब स्वप्नवत् व्यतीत हो जायगा। कैसी भी परिस्थिति उत्पन्न हो जाय, परन्तु घबराने की क्या जरूरत है?"

फिर तो क्या था...पूज्य श्री के दर्शन हो गए और मधुर वचन सुनने को मिल गए। रात्रि को बहुत अच्छी नींद आई। सुबह उठा तो तन एकदम हल्का और मन प्रफुल्लित था। ऐसी ताजगी मैंने पहले कभी नहीं महसूस की थी। फिर ऑफिस जाकर छुट्टी ली और यहाँ पूज्यश्री के दर्शनार्थ आ पहुँचा हूँ।

मेरे उद्धारक, मेरे माता–पिता, मेरे रक्षक–पोषक, मेरे भगवान, मेरे सर्वस्व अब पूज्यश्री ही हैं। उनकी मैं किन शब्दों में स्तुति करूँ–जिह्वा असमर्थ है।

—केशूभाई जे. पटेल
तार मास्तर, कलोल (गुजरात)

गुरूदेव अनेक शरीर धारण कर सकते हैं

पूज्य श्री की अलौकिक शक्तियाँ एवं हम पर उनकी कृपा का स्मरण करके भाव से आँखें भर आती हैं ।

अभी २७ नवम्बर १९८० को पत्नी के साथ मैं हरिद्वार गया था । वहाँ घाटवाले बाबा का दर्शन भी किया । एक बार पूज्य श्री का फोटू मेरे पास किसीने देखा तो उसने पूछा, "ये बाबा कौन हैं ?" मैंने कहा–"ये हमारे गुरूजी हैं ।" उसने कहा–"ये स्वामीजी तो हरिद्वार आते हैं तब सामने वाली बिल्डिंग में ठहरते हैं ।" मैंने उत्सुकता से पूछा–"मुझे जिस कमरे में वे ठहरते हैं वह दिखाओगे ?" उसने कहा–"हाँ चलना, दिखा देंगे ।"

मैं और मेरी पत्नी ने वह कमरा बाहर से देखा । फिर ताला खोलकर हमने भीतर प्रवेश किया तो श्रद्धा से हम झुक पड़े । साष्टांग दण्डवत किया

और गुरूदेव का स्मरण भी किया । बड़े आश्चर्य की बात कि पूज्य श्री उन दिनों हरिद्वार आए हुए नहीं थे अहमदाबाद ही थे, परन्तु उस कमरे में उस समय मेरे सामने साक्षात् आकर खड़े हो गए । लौटते वक्त मैंने पत्नी को कहा कि मुझे तो गुरूदेव के दर्शन हो गए । वह बोली–'मुझे भी हुए हैं ।' हम दोनों को गुरूदेव के दर्शन वहीं बैठे हो गए, परन्तु उस तीसरे व्यक्ति को जो हमारे साथ में था उसे नहीं हुए थे ।

पहले सुना था कि भगवान कृष्ण गोप–गोपिकाओं को अपने अनेक शरीर बनाकर प्रसन्न करते थे, परन्तु उस दिन हमने भगवान की उसी शक्ति को इस युगमें हमारे गुरूदेव में प्रत्यक्ष अनुभव किया ।

बृजलाल चरणदास भाटिया
अमर भारत सोसायटी, साबरमती

ध्यान में गुरूदेव एवं महादेव का दर्शन

मैं पहले गोरखनाथजी को बहुत मानता था और प्रार्थना किया करता था कि मुझे सदैव सद्मार्ग पर प्रेरित करते रहें । एक दिन मैंने देखा कि हमारे घर के द्वार पर एक साधु आया और बोला–

"तुमको बहुत अच्छा गुरू मिल गया है, उनको छोड़ना नहीं और गोरखनाथजी का उपदेश भूलना नहीं...बेटा कुछ देना हो तो दे दो ।"

मैं कुछ भिक्षा लाने के लिये अन्दर गया और लेकर बाहर आया तो देखा, वह साधु अदृश्य हो गया था । इधर–उधर उसे बहुत ढूँढा, परन्तु नहीं मिला । शायद वे गोरखनाथ ही होंगे जो मेरा यह विश्वास और पक्का कराना चाहते होंगे कि पूज्य आशाराम बापू जिनको मैंने अपना गुरू बनाया है, वे मेरे पूर्ण समर्थ गुरू हैं; अतः अब और अधिक नहीं भटकना ।

उस साधु के वचनों की सत्यता कई बार मैंने अपने जीवन में प्रमाणित होते देखी है ।

मैंने सन् १९७८ के उत्तरायण पर गुरूदेव से मंत्र दीक्षा ली थी । मंत्र लेने के दो ही दिन बाद मैंने बड़ा भयावह सपना देखा । सपने में मैंने देखा कि यमराज अपने पाशों में जकड़ कर मुझे आकाश में लिये चले जा रहा है । तभी मैंने गुरूदेव का स्मरण किया । स्मरण करते ही गुरूदेव वहाँ प्रकट हो गए और यमराज से बोले–'कहाँ ले जा रहे हो इसे ? यह तो मेरा बच्चा है ।' तब यमराज मुझे वहीं छोड़कर भाग गए । फिर मैं गुरूजी के साथ आकाश से भूमि पर उतर आया । आँख खुली तब महसूस हुआ कि गुरूदेव अदृश्य रूप से हर समय मेरे साथ रहते हैं और मुझे संकटों से बचाते रहते हैं ।

एक बार किसी धार्मिक मामले में मेरा अपने कुछ जाति वालों से विरोध हो गया । वे विरोधी

मुझे बहुत सताने लगे। मुझ पर कई तांत्रिक प्रयोग भी मेरा अनिष्ट करने के लिये करने लगे। परन्तु जिसका इष्ट मजबूत हो उसका अनिष्ट कैसे हो सकता है? फिर भी मैं घबरा गया था। निराश होकर एक दिन भगवान शंकर के मंदिर में जाकर मन ही मन गुरूदेव का चिंतन करते हुए भरे हृदय से प्रार्थना करने लगा:

"गुरूदे...व! मैं निर्दोष हूँ, फिर भी मेरे ऊपर यह कैसी विपत्ति टूट पड़ी है? क्या आप इस अवसर पर मेरी रक्षा नहीं करेंगे?"

इतने में तो पीछे से आवाज आई–"क्या है... पहाडी बेटा क्यों रोता है?"

मैंने कहा–"मेरी गलती नहीं–मेरा कसूर नहीं, फिर भी इतनी कष्टदायक स्थिति मेरी क्यों बन रही है?"

आवाज–"घबरा नहीं, मैं आ गया हूँ। चिन्ता नहीं कर।"

अब हड़बडाकर मैंने पीछे घूमकर देखा तो एक तेजोमय आकृति लिये मेरे गुरूदेव खड़े थे और उनके पीछे भगवान शंकर भी खड़े मुस्कुरा रहे थे। ऐसा अनुपम दर्शन पाकर मैं गद्‌गद्‌ हो गया। आँखें श्रद्धा एवं अहोभाव से भर उठी। मैंने सिर झुकाकर प्रणाम किया। पुनः सिर ऊपर उठाया और देखा, परन्तु तब तक तो वे अदृश्य हो गए थे। फिर भी उस दिन मेरे दिल का कई दिनों का भार उतर गया और बड़ी शांति मिली।

उन दिनों गुरूदेव भावनगर पधारे हुए थे और दो दिन बाद अहमदाबाद लौट आए थे। फिर भी उस दिन मुझे शिवमंदिर में कैसे दर्शन हुए! इस बात का विचार आते ही उस साधु द्वारा कहे ये शब्द याद हो आते हैं–"तुमको बहुत अच्छा गुरू मिल गया है, उनको छोडना नहीं।"

वाह–वाह मेरे गुरूदेव!

जिन पर आध्यात्मिकता की अनुकम्पा नहीं हुई

वे स्थूल आँख वाले मेरे इस अनुभव की सत्यता पर शंका कर सकते हैं, लेकिन मैं उन्हें दावे के साथ कह सकता हूँ कि–मेरे प्यारे भाईयों, जरा सी महा-पुरूषों की कृपा का स्वाद लेकर देखो, ध्यान की झलक लेकर देखो; फिर आप भी संत तुलसीदासजी के शब्दों में कह उठोगे :

घर में है सूझे नहीं लानत ऐसे जिन्द ।
तुलसी ऐसे जीव को भयो मोतिया बिन्द ॥

धन्य धन्य है भारत देश जहाँ ऐसे गोरखनाथ, कबीर, नानक और हमारे गुरूदेव जैसे महापुरुष अव-तरित होकर हम जैसे हजारों लोगों की नैया पार करते हैं । जहाँ पर ऐसे महापुरुष रहते हैं उस भूमिको मेरे लाख लाख प्रणाम !

लक्ष्मणसिंह पहाड़ी
महादेव मंदिर, नरसरी;अहमदाबाद

गुरू मंत्र का चमत्कार

मैं रोज प्रातः स्नान आदि से निवृत्त होकर ११ मालाएं गुरू मंत्र का जप करता हूँ । इस मंत्र जाप के मैंने कई चमत्कार देखे हैं । हमारे मोहल्ले में रहने वाला एक व्यक्ति हमारे घर के सामने ही हमेशा गंदगी करता रहता था और इस कारण हमेशा कुछ न कुछ उससे कहा सुनी होती ही रहती थी । मैं तो प्रोफेसर आदमी और वह तो पूरा झगडालू–रोज रोज की उससे यह कहा सुनी अब असहनीय होती जा रही थी, पर क्या करूँ–कुछ समझ में नहीं आ रहा था ।

एक दिन सुबह ही सुबह जब में मंत्र जाप कर रहा था तब एकाएक बाहर से मेरी पत्नी और उस झगडालू व्यक्ति के बीच झगड़ा करने की तू तू–मैं मैं की जोर जोर से आवाजें आने लगी । साथ ही करीब २५०–३०० अन्य लोग यह तमाशा देखने को इकट्ठे हुए हैं ऐसा भी आवाजों से भास हो

रहा था। पत्नी बेचारी अकेली है और मैं इधर जप में बैठा हूँ–अभी ४ मालाएं करना शेष भी है– जाऊँ कि नहीं जाऊँ–क्या करूँ–इसी पशोपेश में पड़ा था कि भीतर विचार की एक तरंग उठी कि 'अरे, क्यों चिन्ता करता है गुरूदेव का शिष्य होकर भी ? जप पूरा करले फिर जाना, तब तक गुरूदेव तो हैं ही; तेरा कोई भी क्या बिगाड़ सकता है ?'

झगड़े की आवाजें बढती जा रही थी। आखिर मैंने ११ मालाएँ पूरी की और दरवाजा खोल कर बाहर की ओर दौड़ा। उस समय दरवाजे के जोर से खुलने की आवाज और मेरा रौद्र रूप देखकर न जाने क्या हुआ कि सारी परिस्थिति ही बदल गई। वह भीमकाय गुंडा व्यक्ति जो हमेशा हमारे सर चढने की कोशिश करता था, आज एकाएक भीगी बिल्ली सा बन गया। मेरे में उस समय गुरूदेवने न जाने कौन सा बल भर दिया था कि मैं अपने को तो भूल ही गया था और ऐसा लग रहा था कि मैं

जैसे कोई शक्ति का पुञ्ज ही हूँ। इ...
वह तमाशबीन भीड़ तुरंत तितर-बितर हो गई।

उस दिन के बाद उस झगड़े की जड़ ही कट गई। जो झगड़ा कोर्ट में जाने पर भी नहीं सुलझ सकता था, उसका अंत ऐसे नाटकीय ढंग से होगा इसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। मैंने जब गुरूदेव से इस बात की चर्चा की तो वे बोले–

"मारनेवाले से बचाने वाले हाथ ज्यादा लम्बे होते हैं।" यह सब गुरूदेव की कृपा और उनके द्वारा दिये गए गुरू मंत्र का ही चमत्कार है।

डा. अवधनारायण त्रिपाठी एम ए. पी एच डी.
प्रवक्ता बी. डी. आर्टस कालेज, अहमदाबाद

गुजरातकी एक महत्वपूर्ण पत्रिका 'धर्म संदेश' जिसकी लगभग ७० हजार प्रतियाँ छपती हैं के एक लेख में उसके एक पत्रकार ने पूज्य श्री से प्रत्यक्ष भेंट करने के बाद अपना अनुभव बताते हुए लिखा है :

...एक बार स्वामीजी के दर्शन के लिये आ जाता है उसे अपने हृदय का कब्जा स्वामीजी को सौंपना ही पड़ता है।"

"धर्म संदेश" दीपावली विशेषांक १९७७

संत श्री आशारामजी द्वारा लोगों का नैतिक और धार्मिक जीवन ऊँचा उठाने के लिये किये जा रहे सुधारकार्य बहुत महत्वपूर्ण और सराहनीय हैं। आशारामजी ने यहाँ इस जंगल में मंगल बना रखा है। यहाँ के संत श्री द्वारा प्रेरित सुधारकार्य समाज जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन लाएंगे। आप सब बड़े भाग्यशाली हैं जिनको ऐसे महान् संत का सांनिध्य मिला है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे संत श्री को ईश्वर लम्बी आयुष्य प्रदान करें–उनको दीर्घजीवी बनाएं।

पू. श्री कैलाश पीठाधीश्वर महामण्डलेश्वर
१००८ स्वामी श्री विद्यानन्द गिरिजी महाराज
वेदान्त सर्वदर्शनाचार्य, कैलाश आश्रम, ऋषिकेश